वैश्विक वित्तीय संकट: नई जागरुकता*

बी.महापात्रा

श्री शिरीष चौधरी, मानद सचिव, चेतना ट्रस्ट, डॉ.अशोक चौधरी, न्यासी सदस्य, श्रीमती मधुमिता पाटील, मुख्य कार्यपालक अधिकारी, डॉ.एम.वी.देशपांडे, निदेशक, चेतना इंस्टीट्यूट ऑफ प्रबंध और अनुसंधान (सीएमआईआर), मंच पर विराजमान अन्य प्रतिष्ठितगण, अतिथिगण और प्रतिष्ठित संकाय सदस्य, विद्यार्थीगण, उनके माता-पिता और परिवार के सदस्य। मेरे लिए यह बहुत ही खुशी की बात है कि मैं चेतना प्रबंध और अनुसंधान संस्थान, जो कि एक प्रमुख प्रबंध संस्थान के रूप में उभरी है, में 2011 की बैच के लिए दीक्षान्त समारोह का भाषण दे रहा हूं। यहां थोड़ा रुककर चेतना न्यास के संस्थापक अध्यक्ष: स्वर्गीय श्री मधुकरराव चौधरी, परोपकारी, पूर्व शिक्षा और वित्त मंत्री, महाराष्ट्र और अध्यक्ष, महाराष्ट्र विधान सभा का स्मरण करना उपयुक्त होगा। उनकी इच्छा चेतना को विश्व स्तरीय शिक्षा संस्थान के रूप में विकसित करने की थी ताकि यहां उच्च कोटी के व्यवसायी ज्ञानयुक्त युवाओं का विकास हो सके जो कि कंपनी जगत तथा समाज को अपना अमूल्य योगदान दे पाएंगे। इस संस्थान ने पिछले अनेक वर्षों में प्रबंध शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में तेज विकास करके यह लक्ष्य प्राप्त कर लिया है।

2. खुशी के ऐसे भव्य समारोह में शामिल होना मेरे लिए बहुत प्रसन्नता की बात है। आपमें से अनेकों के लिए आज का दिन चरम प्रसन्नता और आपके जीवन का महत्वपूर्ण पड़ाव सिद्ध होगा। आप विद्यार्थी जीवन से उच्च शिक्षा ग्रहण करके कारपोरेट जीवन में प्रवेश करने जा रहे हैं और आपके सामने सुनहरा भविष्य है। अब भारत में उपलब्ध अवसर भी वैश्विक स्तर के हैं। जब आप मेरी आयु में पहुंच जाएंगे तब भारत से गरीबी समाप्त हो चुकी होगी और भारत उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की श्रेणी में पहुंच रहा होगा। आपमें से कई लोग कंपनियां स्थापित कर चुके होंगे और अन्य कई कारपोरेट सीढ़ी के शीर्ष पायदान पर पहुंच चुके होंगे। आपमें से कईयों ने शिक्षाविद बनने का मार्ग चुना होगा और अन्य कई अपना जीवन समाज सेवा में अर्पित करेंगे।

3. निसंदेह, आज और आगामी कुछ दिन आपके मन में दुख भी रहेगा। कैम्पस का जीवन विद्यार्थियों के लिए एक कवच जैसा होता है जिससे आज आप बाहर आ जाएंगे। आज आप इस संस्था को छोड़ेंगे जिसने आपका पोषण किया और आपकी योग्यता में वृद्धि की और इस प्रकार इस संस्था से आपका जीवनभर का रिश्ता बन गया है। आप यहां के अपने मित्रों की जुदाई महसूस करेंगे। किंतु अब वास्तविक दुनिया में प्रवेश के बाद आपको चुनौतियों का आनंद भी मिलेगा।

नई जागरुकता

4. आप अब अपने जीवन के नए लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं तो मुझे स्वामी विवेकानंद का कथन याद आ रहा है, 'उठो,जागो और तब तक मत रुको जब तक कि लक्ष्य प्राप्त न हो जाए'। मैं नहीं जानता कि आपमें से कितनों को पता है कि स्वामी विवेकानंद का जन्म दिन राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारत सरकार ने स्वामी विवेकानंद के जन्म दिन 12 जनवरी को राष्ट्रीय युवा दिवस घोषित करते समय कहा था कि 'यह महसूस किया गया कि स्वामीजी की विचारधारा और वे लक्ष्य जिनके लिए उन्होंने अपना जीवन अर्पित किया वे भारत के युवाओं के लिए प्रेरणा का उच्च स्रोत बन सकते हैं'। स्वामी विवेकानंद मात्र साधु नहीं थे बल्कि विद्वान और शिक्षक भी थे और उनकी शिक्षा युवाओं के लिए आज भी उपयोगी है। वे चाहते थे कि युवा चरित्र और क्षमता, जीवनमूल्य और प्रभावी कार्रवाई तथा विचार और वास्तविकता को संयुक्त रूप दें।

5. इस बात को ध्यान में रखते हुए मैं विश्व द्वारा सामना किए गए अभूतपूर्व आर्थिक संकट और इस समय जारी सामाजिक क्रांति की पृष्ठभूमि में आज के आयोजन के चुने हुए विषय 'वैश्विक वित्तीय संकट: नई जागरुकता' पर आपके सामने कुछ विचार रखूंगा। यह कोई मामूली संयोग नहीं है कि आपकी संस्था 'चेतना' का अर्थ जागरुकता होता है। आज के मेरे भाषण का प्रारंभिक सूत्र यह है कि हमारी चेतना को जल्द-से-जल्द जगाया जाए। अपनी चेतना को जगाने के लिए सबसे

* श्री बी.महापात्रा, कार्यपालक निदेशक, भारतीय रिजर्व बैंक, द्वारा 21 जनवरी 2012 को मुंबई में आयोजित चेतना प्रबंध और अनुसंधान संस्थान के दीक्षांत समारोह में दिया गया भाषण। श्रीमती उषा जानकीरामण और तारिका सिंह के योगदान के लिए हम उनके हार्दिक आभारी हैं।

पहले आपको यह जानना होगा कि आप शायद जागृत नहीं हैं। युवा क्रांति जो कि दुनिया भर में हो रही है, इस बात की पुष्टि करती है मेरे इस विषय के चुनाव पर भी इसी का आंशिक प्रभाव है।

6. जैसा कि आप निश्चित रूप से जानते हैं, वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए पिछले कुछ वर्ष काफी उथल-पुथल वाले रहे हैं और इन्होंने कुछ प्रश्नातीत आर्थिक सिद्धांतों की जड़े हिला कर रख दीं। वैश्विक वित्तीय संकट ने वित्तीय जगत की नैतिक नींव के आगे ही प्रश्नचिह्न लगा दिया। एक ओर जहां हम लोग इन चुनौतियों का सामना कर रहे थे, वहीं अरब जगत में वर्षों पुरानी शासन व्यवस्था को बदलने के लिए क्रांति हो रही थी। यूरो क्षेत्र के संकट के साथ कुछ यूरोपीय देशों में बेरोजगारी बढ़ने और जन कल्याण की सुविधाओं में कटौती के कारण यूरोप के लोगों का अवसाद बढ़ गया। वर्ष 2011 विशेष रूप से क्रांति के वर्ष के रूप में जाना जाएगा - लालच, असमानता, गलत कार्यों पर आधारित अस्थिर वैश्विक वित्तीय प्रणाली और नेतृत्व की कमी के अंत की शुरुआत। क्या यह एक संयोग मात्र है कि आप 2011 की बैच के हैं जो कि नई चेतना की सीमा रेखा पर खड़ा है।

7. इस पृष्ठभूमि में मैं वर्ष 2011 के तीन अति महत्वपूर्ण युवा आंदोलनों की चर्चा करना चाहूंगा - अरब क्रांति, वाल स्ट्रीट पर कब्जा करों, और स्पैनिश राष्ट्रीय आंदोलन।

अरब क्रांति

8. अरब क्रांति या अरब जागरुकता, जैसा कि आप जानते हैं, मध्य-पूर्व और उत्तर अफ्रीका में दिसंबर 2010 में प्रारंभ हुई आंदोलन और प्रतिकार की क्रांति की लहर थी। इसकी शुरुआत ट्यूनिशिया के कम ज्ञात एक कस्बे सिदी बॉजिद में आप जैसे ही युवक छब्बीस वर्षीय फल विक्रेता मोहम्मद बुलाजीजी द्वारा की गई थी जो कि मात्र एक सामान्य जीवन जीना चाहता था। किंतु जब पुलिस द्वारा उसके फलों का ठेला फलों समेत जब्त कर लिया गया और इन्हें लौटाने के लिए युवक द्वारा किए गए अनुरोध को कस्बे के गवर्नर ने सुनने से मना कर दिया तब उस युवक ने स्वयं को आग के हवाले कर दिया। उसकी मृत्यु के एक पखवाड़े के बाद उस पूरे देश में सरकार विरोध की अभूतपूर्व आंधी चल पड़ी और ट्यूनिशिया के तानाशाह को वहां से भागना पड़ा। इस एक बलिदान से उसने अरब युवाओं की एक पीढ़ी को जगा दिया और अरब के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ दिया।

9. सिदि बॉजिद जैसे कम ज्ञात कस्बे में भड़की इस चिंगारी ने देश के तानाशाह को भागने पर मजबूर कर दिया और तत्पश्चात यह आग शीघ्र ही इजिप्त और लिबिया, येमेन, बहरीन और सीरिया तक फैल गई जहां युवाओं के नेतृत्व में इस क्रांति ने दशकों पुरानी सत्तावादी व्यवस्था को उखाड़ फेंका। इस आंदोलन के भू-राजनैतिक प्रभाव ने विश्व का ध्यान अपनी ओर खींचा। 2011 का नोबेल शांति पुरस्कार प्राप्त करने वाले तीन विभूतियों में से एक (तवाकल कर्मान) भी इस अरब क्रांति के एक प्रमुख नेता थे।

वाल स्ट्रीट पर कब्जा करों

10. अरब क्रांति के बाद विश्व के दूसरे हिस्से में एक अहानिकर आंदोलन हुआ जो *वाल स्ट्रीट पर कब्जा करो* नाम से लोकप्रिय हुआ। यहां मैंने 'अहानिकर' शब्द का प्रयोग किया है क्योंकि इस आंदोलन में किसी तानाशाह की क्रूरता नहीं थी, आंदोलनकरियों पर अत्याचार नहीं हुए, कोई पुलिस फायरिंग नहीं और न ही किसी ने आत्मदाह किया। वस्तुत: यह आंदोलन अमरीका, विश्व के प्रमुख लोकतंत्र, में शुरू नहीं हुई। कनाडा स्थित एडबस्टर्स फाऊंडेशन, जो कि एडबस्टर्स नामक अपनी पत्रिका के माध्यम से विज्ञापन-मुक्त और ग्राहकवाद विरोधी समिति के संदर्भ में कार्य करता था, ने जुलाई 2011 में प्रस्ताव रखा कि कंपनियों की लालच और उनके गलत कार्यों, बढ़ती आय असमानता और वैश्विक वित्तीय संकट के लिए जिम्मेदार माने गए बैंकरों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई न होने के विरुद्ध मैनहटन, आधुनिक वित्त का केंद्र, में *वाल स्ट्रीट पर कब्जा करो* नामक शांतिपूर्ण आंदोलन किया जाए। अमरीका में इसे भारी समर्थन मिला, विशेष रूप से आम जनता का इसे व्यापक समर्थन मिला। अरब क्रांति की प्रमुख मांग लोकतंत्र के लिए थी जो कि जो कि एक युवक के आत्म-बलिदान से प्रज्ज्वलित हुई थी, वहीं अमरीकी विरोध दायित्व निर्धारण और न्याय के लिए और वित्तीय प्रणाली तथा कंपनी जगत के दुष्कृत्यों के विरुद्ध था।

11. किसी बगीचे की भीड़ जैसे मैनहटन में शुरू हुआ यह आंदोलन बाद में तेजी से फैल गया। एक अनुमान के अनुसार विश्व में आज 2,500 से अधिक भौतिक रूप से अधिकारबद्ध स्थान हैं। इस आंदोलन के कारण सामाजिक मीडिया ने इस आंदोलन के लक्ष्य को उभारा और अमरीका में असमानता चर्चा का मुख्य मुद्दा बन गया। इसका नारा - 'हम 99 प्रतिशत हैं' वर्ष का विशेष वाक्यांश बन गया। यह वाक्यांश इस बात को दर्शाता है कि अधिकतर संपत्ति मात्र 1 प्रतिशत लोगों के पास जमा हो गयी है और बाकी के 99 प्रतिशत तुलनात्मक रूप से बहुत पीछे रह गए हैं। यह इस बात को भी दर्शाता है कि अधिकतर लोग कुछ थोड़े से लोगों की गलतियों के लिए भुगतान कर रहे हैं। इस आंदोलन की एक मुख्य विशेषता यह थी कि इसका प्रसार अमरीका के

प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों तक हो गया जो कि उक्त 1 प्रतिशत की श्रेणी में आते हैं। यह तथ्य कि प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी निम्न 99 प्रतिशत के साथ अपना हित पहचान रहे हैं यह बात आश्चर्यजनक किंतु प्रेरक है।

12. इस आंदोलन ने आर्थिक अन्याय और असमानता के मुद्दे को सामने ला दिया। वस्तुत: टाइम पत्रिका ने 'प्रोटेस्टर' का वर्ष के व्यक्ति के रूप में चुनाव किया। वाल स्ट्रीट पर कब्जा (ऑकुपाय) करो आंदोलन का व्यापक आंदोलनों के इतिहास में एक अलग स्थान बन गया है जहां अमरीकी राजनैतिक वर्ग भी नए जमाने के इस आंदोलन पर ध्यान देने के लिए बाध्य हो गया। 'ऑकुपाय' और 'टी पार्टी' के बीच हेडलाइन बनने की प्रतिस्पर्धा ही शुरू हो गयी।

लास इंडिगनाडोस या 15 एम आंदोलन

13. अब मैं स्पेन में 2011 में शुरू हुए आंदोलन *इंडिगनाडोस* (स्पेनिश में जिसका अर्थ प्रचंड होता है) के संबंध में कुछ कहना चाहूंगा। हाल के वैश्विक वित्तीय संकट की शुरुआत से स्पेन पर भारी आघात हुआ और इसकी बेरोजगारी की दर यूरोप में सर्वाधिक हो गयी जिसमें 25 वर्ष तक की आयु के युवाओं की बेरोजगारी दर 40 प्रतिशत को पार कर गयी। इसलिए युवा विरोध की ज्वाला स्पेन में पहुंचना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। जहां युवाओं मे राजनैतिक और बैंकिंग प्रणाली के विरुद्ध निराशा और क्रोध पनपने की शुरुआत वैश्विक वित्तीय संकट की शुरुआत से ही हो गयी थी, वहीं इसने आंदोलन का रूप 15 मई 2011 को लिया जब लाखों युवा माद्रिद में इकट्ठे हो गए और उन्होंने वित्तीय बाजारों की विफलता का विरोध करने के लिए और युवाओं से साथ आने का आह्वान किया। युवाओं का क्रोध इस बात में प्रतिबिंबित हुआ कि सरकार ने सामाजिक कार्यक्रमों में कटौती की घोषणा जारी रखते हुए संकट के लिए जिम्मेदार बैंकों के बेलआउट के माध्यम से यूरोपीय सरकारी ऋण संकट नियंत्रित करने के प्रयास किए।

14. इस आंदोलन पर राजनैतिक दलों से प्रतिक्रियाएं आईं और जनता तथा प्रसिद्ध व्यक्तियों से इसे व्यापक समर्थन मिला। नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री जोसेफ स्टिगलिज माद्रिद में जुलाई 2011 को हुए आंदोलन में सहभागी हुए। भूतपूर्व स्पेनिस प्रधानमंत्री फेलिप गोंजालिज ने इस आंदोलन को 'असाधारण महत्वपूर्ण घटना' का नाम दिया।

15. स्पेन में प्रथम आंदोलन की शुरुआत से ठीक 5 माह बाद 15 अक्तूबर 2011 को भ्रष्टाचार और आर्थिक शक्ति के केंद्रीकरण के विरुद्ध 950 शहरों तथा 82 देशों में वैश्विक आंदोलन हुए जिसमें से सर्वाधिक आंदोलक स्पेन में इकट्ठे हुए थे। इन आंदोलनों की विशेष बात यह थी कि ऊपरी तौर पर ये राजनैतिक और बैंकिंग प्रणाली पर लक्ष्यित थे, किंतु गहराई से देखा जाए तो इसका उद्देश्य इससे कहीं अधिक था। वे समाज में और लागों के आपसी संबंधों में परिवर्तन चाहते थे।

युवा शक्ति

16. आपके मन में यह प्रश्न उठ रहा होगा कि मैं इन आंदोलनों की चर्चा इतने विस्तार से क्यों कर रहा हूं। इसके पीछे का मकसद युवा शक्ति और यदि इस शक्ति को निर्माणात्मक कार्यों में प्रयोग किया जाए तो यह समाज तथा देशों में कैसा सकारात्मक बदलाव ला सकती है यह दिखाना था। यह युवा शक्ति को यह तथ्य सिद्ध कर देता है कि इन आंदोलनों ने कुछ सरकारों को उखाड़ दिया और इन्हें राजनैतिक दलों तथा जनता से व्यापक समर्थन मिला। युवाओं के रूप में आप ऊर्जा से भरे हुए हैं और अपने जीवन में कुछ खास करने की तमन्ना रखते हैं। ये आंदोलन जहां एक ओर संगठित युवाओं की शक्ति को दर्शाते हैं, वहीं इससे जुड़े एक और मुद्दे अर्थात भीड़ की मानसिकता पर भी विचार करने की आवश्यकता है। मेरा निजी विचार है कि इन आंदोलनों में एकल व्यक्ति अपनी पहचान नहीं खोता है बल्कि वे किसी समूह की पहचान के रूप में कार्य करते हैं। सामूहिक पहचान चर्चा के माध्यम से करार करती है।

17. किंतु, जहां किसी आंदोलन का भाग बनना बहुत सामान्य बात है (या कहिए कि कारपोरेट जगत की ऐसी स्थिति जहां आप किसी अभिमत के साथ जाना पसंद करते हैं), वहीं मैं विश्व की प्रथा के साथ बहने के विरुद्ध आपको सावधान करना चाहूंगा। आप स्वयं को पहचानिए और इस बात को समझ लीजिए कि वही सफलता दीर्घकालिक होती है जो नैतिक मूल्यों की मजबूत नींव पर खड़ी होती है। यदि आपको अपनी अंतरआत्मा से तर्क करना पड़े तो आप अपनी सफलता का मजा नहीं ले सकते। नैतिक मूल्यों का अपना विश्वास होता है जो कि आपके कार्यों में दिखना चाहिए। विश्वास बनाने में काफी समय लगता है किंतु दुर्बलता का एक क्षण भी इसे नष्ट कर सकता है।

वैश्विक वित्तीय संकट - सीखने योग्य सबक

18. प्रबंध स्नातक के रूप में आपके लिए वैश्विक वित्तीय संकट के पीछे के आर्थिक, रणनीतिक और नैतिक कारणों को समझना महत्वपूर्ण है जिनके कारण विश्वभर में युवा क्रांति कर रहे हैं।

19. अनेक बार यह कहा जाता है कि जो लोग इतिहास को नहीं पाते उन्हें उसकी पुनरावृत्ति झेलनी पड़ती है। यदि हमारे वित्तीय विशेषज्ञ, राजनैतिक नेतागण, विनियामक और कुल मिलाकर समूचा राष्ट्र भूतकाल से सबक नहीं सीखेंगे तो भविष्य में हमें अधिक गंभीर आर्थिक और बाजार संबंधी उथल-पुथल का सामना करना पड़ेगा। अत: आप सभी के लिए यह आवश्यक है कि आप विश्व द्वारा सामना किए गए संकट, उसकी उत्पत्ति, कारण और सर्वाधिक महत्वपूर्ण रूप से इससे सीखने योग्य सबक के संबंध में अधिकाधिक सामग्री पढ़े।

20. जॉन केनेथ गालब्रेथ ने कहा था कि 'इस बात पर एक बार फिर बल दिया जाए और विशेष रूप से इन मामलों में संदेहवाद को निजी तौर पर प्रोत्साहित करने वाले के लिए: व्यावहारिक प्रयोजनार्थ, वित्तीय स्मरण अधिकतम 20 वर्ष तक रहना चाहिए'। सामान्यत: किसी संकट की यादें मिटने और पुरानी घटनाओं के आधार पर कुछ नई बातें होने वित्तीय सोच पर नियंत्रण जमाने के लिए उतना समय सामान्य होता है। और लगभग इतना ही समय एक नई पीढ़ी को आगे आने में लग जाता है जो कि अपने पूर्ववर्तियों से प्रभावित किंतु नए विचारों से भरी होती है।

21. चार्टर्ड फाइनान्शल एनालिस्ट सोसायटी ऑफ यूके की रिपोर्ट में वित्तीय व्यावसायिकों के बीच 'स्मृति लोप' की यह तर्क देते हुए आलोचना की है कि पूर्ववर्ती संकटों से सबक न सीखने के कारण हाल का वित्तीय संकट आया था और भविष्य में भी आ सकता है। जब भी कोई संकट आता है तब विशेषज्ञ कहते हैं कि वे इसकी पूर्वकल्पना क्यों नहीं कर सके। विशेषज्ञ तर्क देते हैं कि 'इस समय यह अलग प्रकार का है'। किंतु साक्ष्यों से पता चलता है कि सभी संकटों का कारण एकएमान होता है जैसे पूर्ववर्ती संकटों से कुछ न सीखा गया हो। अत: अब यह विचार जोर पकड़ने लगा है कि वित्तीय व्यावसायिकों की अनिवार्य शिक्षा में वित्तीय इतिहास प्रमुख भाग होना चाहिए। मैं इस संबंध में आपके विचार जानना चाहूंगा।

व्यष्टिआर्थिक और समष्टिआर्थिक कारक

22. तो, संकट के पीछे क्या कारण थे? इसके अनेक कारण थे। यहां सभी को कवर करना बहुत कठिन है। अत: मैं मात्र बहुत महत्वपूर्ण कारणों की ही चर्चा करूंगा। एक कारण तो यह है कि वित्तीय क्षेत्र का अत्यधिक विस्तार हो गया है जिसका आंशिक कारण यह था कि जोखिम को ठीक से नहीं समझा गया और दूसरा कारण यह था कि नीति निर्माताओं ने इसके विस्तार को प्रोत्साहित किया था। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो यह संकट समष्टिआर्थिक और व्यष्टिआर्थिक कारकों के बीच के अंतरकार्य का परिणाम था। समष्टिआर्थिक दृष्टि से, संकट के कारणों में वैश्विक असंतुलनों का बने रहना, प्रमुख उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में अपनायी गई अत्यधिक निभावी मौद्रिक नीति और नीति निर्माण में आस्ति मूल्यों की पहचान की कमी गिनाए जा सकते हैं। व्यष्टिआर्थिक दृष्टि से, संकट के कारणों में पर्याप्त विनियमन के बिना तेज वित्तीय नवोन्मेष, ऋण में तेजी और ऋण मानकों में कमी आना, अपर्याप्त कंपनी अभिशासन और वित्तीय क्षेत्र में अनुचित प्रोत्साहन प्रणाली के साथ ही वित्तीय प्रणाली में समग्र निगरानी में शिथिलता को गिनाया जा सकता है। हमें इस संकट से यह सीख लेनी चाहिए कि संभाव्य जोखिम पर ध्यान दिए बिना लाभ के पीछे बेतहाशा भागने में बाजारों के अस्थिर होने की संभावना होती है।

कंपनी अभिशासन

23. नीति निर्माताओं का ध्यान आकर्षित करने वाला एक मुद्दा कंपनी अभिशासन (गवर्नन्स) का है। कंपनी अभिशासन अपने आधार स्तर पर स्वामित्व और प्रबंधन में अंतर और स्वामियों, प्रबंधकों और अन्य जोखिमधारकों के हितों में तालमेल रखता है। कंपनी अभिशासन के सुदृढ़ मानकों की प्रथा से निवेशक को भरोसा होता है कि कारोबारी वातावरण उचित और पारदर्शी है और यह कि उनकी कार्रवाई के लिए कंपनी को जिम्मेदार माना जा सकता है। प्रायोगिक अध्ययन से पता चलता है कि निवेशक अच्छी अभिशासन प्रथाओं वाली कंपनियों के लिए प्रीमियम के भुगतान के लिए तैयार रहते हैं।

24. किंतु संकट से निपटते समय कंपनी अभिशासन में अनेक दुर्बलताएं देखी गईं। कारपोरेट अभिशासन व्यवस्था को परखने पर वह बैंकों और वित्तीय सेवा कंपनियों में अधिक जोखिम लेना रोकने में विफल सिद्ध हुई। अध्ययनों से पता चला है कि अनेक मामलों में जोखिम प्रबंध प्रणालियां विफल होने का कारण प्रयोग में लाए गए गणितीय माडलों की अपर्याप्तता की तुलना में दुर्बल कंपनी अभिशासन अधिक था। बोर्ड और कुछ मामलों में तो वरिष्ठ प्रबंध तंत्र भी सूचनात्मक और दायित्वपूर्ण जोखिम प्रबंधन उपाय तथा प्रबंध सूचना संरचना की स्थापना करने में विफल रहा। अनेक मामलों में संस्थागत व्यवस्थाओं में जोखिम लेने वालों को स्वतंत्र जोखिम प्रबंधकों और कार्मिकों के नियंत्रण की कीमत पर महत्व और स्टेटस दिया गया। जहां रणनीति लागू की गयी थी वहां बोर्डों ने कार्यान्वयन की निगरानी के लिए उपयुक्त आकलन व्यवस्था नहीं अपनायी थी।

25. कंपनी अभिशासन के क्षेत्र में सुधार के उपाय शुरू किए गए हैं। अनेक देशों में वित्तीय संस्थाओं के समग्र कार्यों में सुधार लाने और

अभिशासन में वृद्धि करने के लिए जोखिम प्रबंधन, मुआवजा नीतियां और बोर्ड तथा शीर्ष प्रबंध तंत्र के संबंध में परिचालनों में पारदर्शिता के मामले में व्यापक संरचनात्मक परिवर्तन किए गए।

26. विकसित और विकासशील देशों में कंपनी अभिशासन का संकट बार-बार आने से यह सीख ली जा सकती है कि निगरानी का कार्य हर समय जारी रखा जाए। विभिन्न देशों में विभिन्न संस्थाओं में कंपनी अभिशासन की विफलता के अध्ययन से यह समझने में मदद मिलती है कि अभिशासन की विफलता को दूर करने के उपाय और सुधार कुछ संदर्भों में प्रभावी और कुछ में कम प्रभावी हो सकते हैं और यह कि सुधारों का समय और फोकस संबंधित देशों की आर्थिक और संस्थागत वास्तविकताओं के अनुसार होना चाहिए।

27. जहां तक भारत का प्रश्न है, हमारा बैंकिंग क्षेत्र संकट से सामान्यत: अप्रभावित रहने के बावजूद कुछ आत्मचिंतन करने की आवश्यकता निश्चित ही है क्योंकि यहां भी कंपनी अभिशासन की विफलता के कुछ मामले देखे गए हैं। इसका एक उदाहरण यह है कि बैंकों ने ग्राहकों को गलत तरीके से विदेशी मुद्रा डेरिवेटिव की बिक्री की थी। अत: बैंकों और वित्तीय संस्थाओं के लिए यह आवश्यक है कि वे व्यापक जन हित में अपने दायित्वों के प्रति अधिक जिम्मेदारी से कार्य करें।

प्रतिलाभ प्रथाएं

28. वैश्विक संकट के संदर्भ में उभरे अनेक मुद्दों में से वित्तीय क्षेत्र में कार्यपालकों के वेतन और प्रतिलाभों की प्रथाएं भी जन-क्षोभ को भड़काने का प्रमुख कारण थीं। इस बात की काफी आलोचना हुई है कि प्रोत्साहन और वेतन के पैकेज अनुपयुक्त रूप से निर्धारित किए गए थे जिससे गैर-जिम्मेदाराना जोखिम लेने को प्रोत्साहन मिला और साथ ही वे संस्था के पूंजी आधार से संगत नहीं थे तथा अल्पकालिक लाभ वृद्धि पर केंद्रित थे। वरिष्ठ कार्यपालकों के प्रतिलाभ अत्यधिक माने गए थे क्योंकि संबंधित संस्थाओं के दीर्घकालिक निष्पादन से इसका कम संबंध होता है। ध्यान को विशेष रूप से आकर्षित करने वाला मामला विफल हो चुकी उन संस्थाओं के कार्यपालकों के मल्टि मिलियन डॉलरों के भुगतान और बोनस का था जिनमें जनता से निधि ली गई थी। सबसे बड़ा जन-क्षोभ का मामला संभवत: बीमा और वित्तीय सेवाओं की बड़ी संस्था एआईजी का होगा। यह सूचना दी गयी थी कि 2008 की चौथी तिमाही में इसे 61.7 बिलियन डॉलर की हानि हुई थी और फेडरल बेलआउट से इसे 170 बिलियन डॉलर से अधिक राशि प्राप्त हुई थी। किंतु एआईजी ने मार्च 2009 तक 450 मिलियन के कुल पे-आउट के भाग के रूप में कार्यपालकों को 165 मिलियन डॉलर से अधिक राशि का भुगतान किया था।

29. अब इस बात को व्यापक रूप से माना जा रहा है कि उन्नत देशों में बैंकों और वित्तीय संस्थाओं में प्रोत्साहनों और प्रतिलाभ की गलत संरचना भी उक्त संकट का एक प्रमुख कारण थी। जहां बड़ी वित्तीय संस्थाओं को कार्यरत रखने के लिए हानि के बड़े भाग का वहन निवेशकों को करना पड़ा और करदाताओं के ट्रिलियन्स डॉलर का व्यय हुआ, वहीं तेजी के दौर में इन बैंकों के कार्यपालकों और कर्मचारियों ने लाभ में अननुपातिक रूप से हिस्सा प्राप्त किया था। इससे यह जनभावना बलवती हुई कि बैंकरों ने बहुत अधिक छूट ले रखी है जबकि वास्तविक अर्थव्यवस्था को उत्पादन और वृद्धि की अभूतपूर्व हानि हो रही है।

30. वित्तीय संकट के बाद इस बात के प्रयास किए जा रहे हैं कि बुरे अधिकारी लाभ लेकर आसानी से न जा पाएं। संकट के प्रारंभ से कार्यपालकों के वेतन के संबंध में उभरी एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति यह है कि इसका विनियमन अंतरराष्ट्रीय तौर पर हुआ है। 2009 में दो जी20 शिखर सम्मेलनों का आयोजन हुआ जिनमें कार्यपालकों के वेतन के संबंध में व्यापक ध्यान दिया गया। इसके अलावा, वैश्विक वित्तीय प्रणाली पर ध्यान रखने वाला विनियामक निकाय - वित्तीय स्थिरता बोर्ड ने प्रतिलाभ के विनियमन के लिए सिद्धांतों का सेट विकसित किया है। प्रस्तावित संरचना में वेतन में आनुपातिक अंतर रखना, इसे दीर्घकालिक मूल्य निर्माण से जोड़ना और कार्यपालकों द्वारा होने वाली आगे की हानियों के संतुलन के लिए आस्थगन और कराधान द्वारा भरपाई करने की शर्तें शामिल हैं।

नीतिशास्त्र

31. संकट संबंधी इन शर्तों में कौनसी सामान्य बात है और दूसरे संकट को रोकने के लिए कौन से सुधार किए जा रहे हैं? यह नीतिशास्त्रीय आयाम है। संकट ने इस बात को रेखांकित किया कि विश्वास - बैंकों, वित्तीय प्रणाली, मूल्यांकन एजेंसियां, निवेश परामर्शदाता और रानीतिज्ञों पर विश्वास को गहरी ठेस पहुंची। विश्वास वित्तीय बाजारों के कार्यों का महत्वपूर्ण घटक है क्योंकि वित्तीय संबंधों का सामान्य स्वरूप उच्च स्तरीय विश्वास पर आधारित होता है। विश्वास निर्माण होने में काफी समय लगता है और इस संकट ने विश्वास पर ही जबरदस्त चोट की। इस संदर्भ में मन में अनेक प्रश्न आते हैं। क्या वित्तीय प्रणाली की श्रृंखला के घटकों का व्यवहार उचित और नीतिपूर्ण था या यह तात्कालिक लाभ कमाने और मोटा बोनस बनाने की लालच से प्रेरित

था? क्या बैंकों और निवेश परामर्शदाताओं ने अपने ग्राहकों को जटिल वित्तीय उत्पाद बेचते समय उससे जुड़ी जोखिम की जानकारी दी थी? और मूल्यांकन एजेंसियों के संबंध में क्या कहा जाए? क्या उन्होंने अपने मानकों के साथ समझौता किया था?

32. इस संकट ने एक और दिलचस्प और साथ ही अंत:प्रेरणा संबंधी चर्चा को प्रेरित किया कि वित्तीय क्षेत्र में दिखा यह संकट कहीं समग्र रूप से समाज में नैतिक मूल्य प्रणाली के स्तर में गिरावट का नतीजा तो नहीं है। यहां नेतृत्व का मुद्दा सामने आता है। क्या उच्च स्तरीय वित्तीय क्षेत्र के नेताओं ने यह गिरावट लायी है? क्या नेतागण आधुनिक वित्तीय संरचना की व्यापक सफलता से अचंभित हो गए थे और युक्तिहीन संपन्नता के फेर में पड़ गए और भावी अंधेरा नहीं देख पाए? संभवत: नेतृत्व में वह गुण होना चाहिए जो वित्तीय प्रणाली को स्थिर रख सके ताकि इससे वास्तविक अर्थव्यवस्था का भला हो सके।

एमबीए शपथ

33. इस संदर्भ में मैं विचार करने के लिए आपके सामने एक महत्वपूर्ण मुद्दा छोड़ जाऊंगा। मुझे आशा है कि आपने एमबीए शपथ के संबंध में सुना ही होगा। जिन्होंने इसके संबंध में नहीं सुना है उन्हें मैं बतलाना चाहूंगा कि यह शपथ प्रबंधन क्षेत्र के व्यावसायीकरण की दिशा में उठाया गया एक छोटासा कदम होती है जैसा कि चिकित्सा और विधि के क्षेत्र में होता है। यह प्रबंधन शपथ डॉक्टरों द्वारा ली जाने वाली हिप्पोक्रेटिक शपथ के समतुल्य होती है। यह एक स्वैच्छिक शपथ होती है जिसमें एमबीए स्नातक दायित्वपूर्ण और नैतिकपूर्ण तरीके से नैतिक मूल्यों के निर्माण की प्रतिबद्धता स्वीकारते हैं। हार्वर्ड में दो प्रोफेसर एमबीए शपथ तैयार करने में लगे हुए हैं जिसे बाद में संभवत: वैश्विक प्रारूप के तौर पर इस्तेमाल किया जा सकेगा।

34. यह शपथ प्रबंधकों के लिए नैतिक आचार संहिता का एक औपचारिक लिखित रूप होने के बावजूद कारोबार में नैतिकता के विचार की बात बीसवीं सदी की प्रारंभिक अवधि में प्रबंध शिक्षा की शुरुआती संरचना में देखी जा सकती है। प्रबंध की उपाधी स्थापित करने के पीछे मूल भावना प्रबंधकीय वर्ग को इस प्रकार शिक्षित करने की थी जिससे पूंजी और श्रम के हित के संकीर्ण दृष्टिकोण की तुलना में समाज की व्यापक रूप से भलाई हो सके। हाल के वर्षों में प्रबंधन स्नातकों को इस बात के लिए दोष दिया गया है कि उन्होंने पर्याप्त नियंत्रण के बिना जटिल उत्पादों वाली वित्तीय प्रणाली बनायी है। इसने हार्वर्ड बिजनेस स्कूल के स्नातकों के एक दल ने विद्यार्थी-आधारित पहल शुरू की और 2009 की कक्षा के सभी स्नातक विद्यार्थियों को एमबीए शपथ पर हस्ताक्षर करने के लिए प्रोत्साहित किया। ऐसी सूचना है कि उस वर्ष के स्नातकीय विद्यार्थियों में से आधे से अधिक ने उस शपथ पर हस्ताक्षर किए थे।

35. सच्चे प्रोफेसरों ने आचार संहिता अपनानी चाहिए तथा उसका अर्थ और परिणाम उनके सदस्यों की औपचारिक शिक्षा के एक भाग के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए। मैंने यहां इस विषय का उल्लेख विशेष रूप से किया है क्योंकि मेरा मानना है कि युवा हमारे समाज का प्रभावी हिस्सा है। आपके द्वारा अपने नीजि और व्यावसायिक व्यवहार में अपनायी जाने वाली नैतिक मूल्य प्रणाली समाज की नैतिक मूल्य प्रणाली को प्रभावित करती है। इस प्रकार अपने पूरे जीवन में उच्च नैतिक मूल्यों का पालन करने का महान दायित्व आपके युवा कंधों पर है।

36. विश्व की कुछ सर्वाधिक सफल और लाभप्रद कंपनियां वे रही हैं जो अति उच्च नैतिक मानकों का पालन करने के लिए जानी जाती हैं। महत्वाकांक्षा के बिना आदर्शवाद या नीतिशास्त्र संभवत: अधिक नहीं अपनाया जा सकता किंतु आदर्शवाद या नीतिशास्त्र के बिना महत्वाकांक्षा तबाही ला सकती है। मैं आशा करता हूं कि आप इन दोनों को उचित अनुपात में संयुक्त करेंगे और तभी आप इस प्रकार कार्य कर सकेंगे जो कि आपके लिए और पूरे समाज के लिए लाभदायक होगा।

समापन

37. अब मैं अपने भाषण का समापन करना चाहूंगा। मैंने अरब आंदोलन से शुरुआत की थी जो कि एक सामाजिक क्रांति थी। उसके बाद मैंने इस बात की चर्चा की कि कारपोरेट लालच और आर्थिक असमानता के कारण जन-क्षोभ भड़क उठा था जो कि वाल स्ट्रीट पर कब्जा करो नाम से जाना गया। मैंने स्पेन में हुए लॉस इंडिगनाडोस आंदोलन की चर्चा की जिसमें आर्थिक और राजनैतिक प्रणालियों की खामियों के कारण उत्पन्न जनता के क्रोध को दर्शाता है। ये 2011 के तीन स्टैंडआउट जागरुकता आंदोलन थे। इन तीनों आंदोलनों ने जन भावना उभारने के लिए सोशल नेटवर्किंग प्लेटफार्मों का उपयोग बखूबी किया और इस प्रकार संगठित युवा शक्ति को रेखांकित किया। तत्पश्चात मैंने इस संकट के पीछे के आर्थिक, रणनीतिक और नैतिक कारकों तथा इससे सीखे जाने योग्य सबकों की चर्चा की। मैंने नैतिक आयामों की विशेष रूप से चर्चा की जिन्हें आपको जीवनभर अपने दिमाग में रखना है।

38. अपनी जीवनयात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव पार करने पर मैं आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूं। हमारे पास उपलब्ध सर्वोत्कृष्ट में से आप भी कुछ का प्रतिनिधित्व करते हैं। जब आप वास्तविक दुनिया में प्रवेश करेंगे तब कृपया याद रखें कि जब आप किसी विश्लेषण की सीमा पर पहुंच जाएंगे तब यह आंतरिक आवाज - आपकी नैतिक आवाज या 'चेतना' - ही होगी जो आपका मार्गदर्शन करेगी। मेरी शुभकामनाएं आपके साथ हैं कि आपका भविष्य उज्ज्वल हो और आपकी इच्छाएं तथा सपने साकार हों।